अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अगस्त-2024

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–चौथा	अगस्त–2024

शब्द	2	सिमरन एक जरूरी दवा है	19
सच बोलना शुरु कर दें	3	अमृतवेला	30
मन के साथ मुकाबला	5	धन्य अजायब	32

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71
उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **अत्तर मल्होत्रा**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 269 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

मलायक से बशर से

मलायक से, बशर से, हूर से, सबसे सिवा निकले,
हमारे शहनशाह दोनों जहानों से जुदा निकले, x 2
मलायक से .....

1. *खुली जब आँख तो इन्सां के जामें में खुदा निकले, x 2*
समझते थे उन्हें हम क्या इलाही और वह क्या निकले,
हमारे शहनशाह .....

2. *खुदा जल्वानुमा उनमें खुदा में वह फ़ना निकले, x 2*
ना वह उनसे जुदा निकला ना वह उससे जुदा निकले,
हमारे शहनशाह .....

3. *मोहब्बत में वह कुछ इक दूसरे की मुब्तिला निकले, x 2*
खुदा उन पर फिदा निकला, खुदा पर वह फिदा निकले,
हमारे शहनशाह .....

4. *वजूदे खाके आलम में वह इसरारे बकां निकले, x 2*
इसी कूचे खुदा खुद था इलाही वह खुद खुदा निकले,
हमारे शहनशाह .....

5. *चलो दीदार कर लो आज ही सतसंग में उनका, x 2*
खुदा जाने कयामत कब हो और क्या माजरा निकले,
हमारे शहनशाह .....

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज का अंतिम संदेश

सच बोलना शुरु कर दें

27 जुलाई 1974 के भंडारे के बाद एक अगस्त को सुबह एकत्रित सतसंगी, महाराज जी का टेप रिकार्ड किया हुआ पुराना प्रवचन सुनने के पश्चात उनके दर्शनों के लिए उनके निवास स्थान के सामने मैदान में खड़े हो गए। महाराज जी ने बाहर आकर चारपाई पर लेटे हुए ही माइक्रोफोन पर पांच मिनट के लिए संगत के साथ दिल से बातें की।

हुजूर ने बड़ी जोरदार गंभीर आवाज में कहा, ''क्यों भई, मैं आप लोगों को बीमार लगता हूँ?'' सबने कहा, ''नहीं।'' सुख–दुख आया ही करते हैं, कोई बड़ी बात नहीं। आप लोग घरों से चलकर दर्शन करने के लिए आए हैं? दर्शन का कोई मतलब तो होना चाहिए। दर्शन दो तरह का है, एक खाली दर्शन करना या दूसरा भाव–सहित दर्शन करना।

आप लोग इसी भावना से बैठे हैं कि मनुष्य जन्म से आपको पूरा फायदा मिले। उसके लिए आज मैं आपसे दो चीजें मांगता हूँ। *पहली बात*, आप आज से ही **सच बोलना शुरु कर दें**। एक सच बोलने से सौ पाप धुल जाते हैं और एक झूठ बोलने पर सौ झूठ बोलने पड़ते हैं।

दरोगा गोरा हाफजा न बायद।

झूठ बोलने के लिए दिमाग चाहिए। बात समझे कि मैं आपसे क्या माँग रहा हूँ? आप लोग जिस दर्शन से फायदा उठाने के लिए आए हैं, उसके लिए पहली जरूरत है कि आप आज से **सच बोलना शुरु कर दें**, यही आपकी डायरी है। घर, बाहर और हर एक काम में सच बोलें। यह सच आपके सारे पापों को धो देगा।

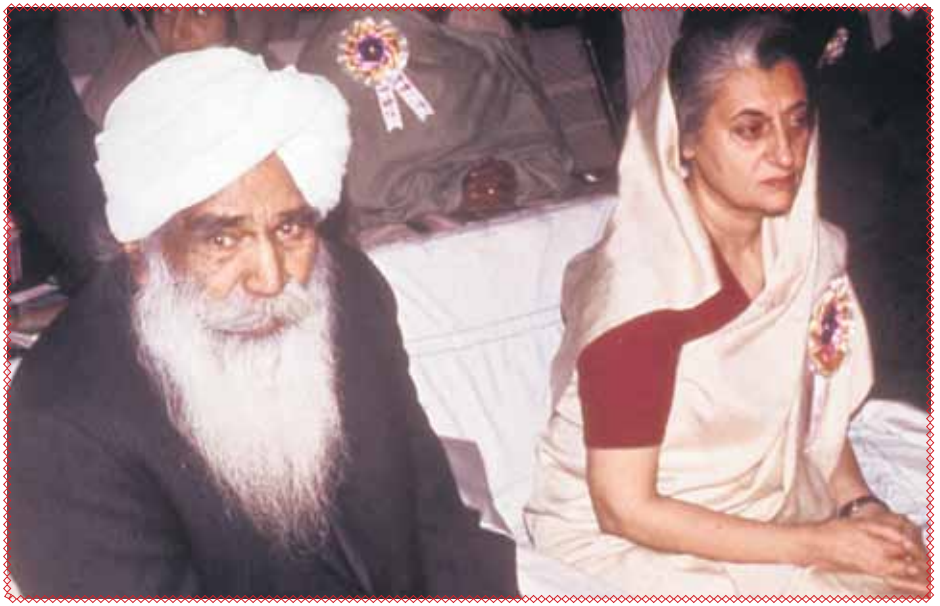

दूसरी बात, जिनको भजन मिला है अगर वे भजन नहीं करते तो एक घंटा जरूर भजन करें। मालिक आपकी सारी भावनाएं पूरी करेगा। आप लोग दर्शन करने आए हैं, लम्बे ज्ञान–ध्यान की बातें तो आपने बहुत सुनी हैं और सुनते ही रहेंगे। मैं आज आपको मतलब की बात कह रहा हूँ।

आज से **सच बोलना शुरु कर दें**, आप सच बोलेंगे तो आपके बच्चे भी सच बोलेंगे। हम बच्चों को झूठ बोलना सिखाते हैं। सच बोलेंगे तो पाप नहीं करेंगे, एक घंटा भजन करना शुरु कर दें।

मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ मगर वह प्यार प्यार ही रहा। कहना न मानने से आपने पूरा फायदा नहीं उठाया, लाड में रहे। याद रखें, संदूक में साफ कपड़े ही रखे जाते हैं। आप मालिक की दरगाह में तभी परवान होंगे जब आपका दिल साफ होगा और उसमें भजन का रस होगा। मैं थोड़े लफ्जों में आपको तत्व की बातें बता रहा हूँ, इनको रिकार्ड कर लें और इन्हें हर वक्त अपने सामने रखें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

मन के साथ मुकाबला

04 जनवरी 1980 | 77 आर.बी. आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी: *क्या आप मुझे ब्रह्मचर्य का मतलब बता सकते हैं?*

बाबा जी: अभी आप बच्ची हैं, जब बड़ी हो जाएंगी तब आपको पता चल जाएगा।

एक प्रेमी: *सन्त जी, कल आपने हमें बहुत खूबसूरत कहानी सुनाई जिसमें आपने हमें बताया था कि किस तरह आप पहली बार सावन शाह से मिले और किस तरह बाबा बिशन दास जी महाराज सावन से मिले। आपने उस कहानी के अंत में यह भी बताया कि आपका मिलाप बाबा सोमनाथ जी से भी हुआ। क्या उस मिलाप के समय कोई और घटना भी घटी थी? क्या आपकी बाबा सोमनाथ जी से कोई और भी बातचीत हुई? मैं जानना चाहूँगा क्योंकि यह कहानी मेरे दिल को बहुत प्रिय है।*

बाबाजी: नहीं, और कोई बात नहीं हुई। जब बाबा बिशन दास जी ने सावन शाह को मेरे बारे में बताया कि इसने भी धुनियाँ तपाई हैं, घर छोड़कर बाहर काफी खोज और तप वगैरह किए हैं। तब महाराज सावन सिंह जी ने बाबा सोमनाथ को बुलाया और बताया कि हमारे इस सेवक ने भी इसी तरह तप–त्याग और मालिक की खोज की है। इससे ज़्यादा मेरी बाबा सोमनाथ से कोई मुलाक़ात नहीं हुई।

वहाँ उज्जैन के रहने वाले हनुमान महात्मा भी थे, जिन्होंने बारह साल धुनियाँ तपाई थीं, महाराज सावन सिंह जी ने उनसे भी मुलाकात करवाई। महात्मा हनुमान ने अपनी जिंदगी की एक घटना सुनाई कि मुझे चिलम या हुक्का पीने की आदत थी। मैंने उस आदत को छोड़ने की

बहुत कोशिश की लेकिन वह आदत छूटी नहीं। महाराज सावन सिंह जी ने एक बार सतसंग में कहा था:

भांग माशली सुरा पान जो जो प्राणी खाए,
तीर्थ व्रत और दान किए सब्बै रसातल जाए।

महात्मा हनुमान ने कहा कि सावन शाह के ये बोल मुझे तीर की तरह चुभ गए। जब मैं पहले तंबाकू छोड़ने की कोशिश करता तो मेरा मुँह सूज जाता और कब्ज हो जाती थी। जब मैंने यह बात सावन शाह को बताई तो उन्होंने कहा, ''यह मन की वजह से है अगर मुंह सूजने से ही तंबाकू छोड़ने की आदत हट जाए तो ज़्यादा उपाय करने की क्या ज़रूरत है।'' इसलिए मन को ज्यादा उपाय करने की जरूरत ही नहीं पड़ती, आप मजबूत हो जाएं।

महात्मा हनुमान ने हँसकर कहा कि मुझे तंबाकू पीने की आदत छोड़े हुए तीस साल हो गए हैं लेकिन आदत तो आदत ही होती है। मैं जिन यार–दोस्तों की मंडलियों के साथ तंबाकू पिया करता था, वे अभी भी मुझे रात को स्वपन में दिखाई देते हैं और कहते हैं कि हनुमान, चिलम पकड़ो। जब मैं जागता हूँ तो न वहाँ कोई मंडली होती है और न ही कोई चिलम होती है फिर मैं मन को धिक्कारता हूँ। महात्मा हनुमान ने यह बात बताकर हमें बहुत हँसाया।

एक प्रेमी: *जब आप टूर पर आएंगे तो हम क्या तरीका अपनाए जिससे कि हम अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को आपके पास आने की प्रेरणा दे सकें?*

बाबा जी: आप उन्हें अभी से सन्तमत का साहित्य पढ़ने के लिए दें।

एक प्रेमी: *जब आपको शुरुआत में बाबा बिशन दास जी से 'दो शब्द' का ज्ञान मिला तो क्या आपको भी उन दो शब्दों का लगातार*

जाप करने में कोई परेशानी होती थी? अगर होती थी तो आपने उसे लगातार जपने का क्या तरीका या चालाकी अपनाई?

बाबाजी: मैं तकरीबन अठारह साल ज़मीन के अंदर बैठकर 'दो शब्द' का अभ्यास करता रहा। चालाकी से कुछ नहीं होता, नम्रता और अभ्यास करने से ही कुछ होता है।

भोले लोग विचारे तां रह जान्दे, जेकर चतर ही ओनू भरमा लैंन्दे।

अगर परमात्मा चतुराई से वश में आते तो भोली–भाली दुनिया रह जाती इसलिए मैं कहा करता हूँ कि सन्तमत के शुरू–शुरू के अभ्यास थोड़े से मुश्किल हैं, बाद में इतने मुश्किल नहीं होते।

मैं जब आर्मी में था, उस वक्त हिटलर हर तरफ़ और हर फ्रंट पर अड्वन्स कर रहा था। उस समय कोई भी आदमी लड़ाई में जाने के लिए तैयार नहीं था। जब किसी पलटन का नंबर आता और अगले दिन उन्हें गाड़ी में बैठकर रवाना होना होता तब उनके रिश्तेदार और यार–दोस्त उनके गले में हार डालकर उन्हें विदा करने के लिए जाते लेकिन वे आदमी भगोड़े हो जाते थे। तब यह हालत थी, हर आदमी को यही लगता था कि यहाँ तो साँस चल रहे हैं लेकिन आगे जाकर तो खत्म हो जाएँगे।

उस वक्त मेरी उम्र ज़्यादा नहीं थी, तकरीबन अठारह साल थी। मैंने खुशी से लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम दिया। अफ़सर मुझसे बहुत प्यार करते थे कि यह छोटा सा बच्चा है और इसने लड़ाई में जाने के लिए नाम दे दिया है। उस समय अफ़सरों के दिल भी ऐसे ही थे। जिस दिन हमने लड़ाई के लिए जाना था, उससे एक महीना पहले हमारी डॉक्टरी जाँच हुई। हमारे कपड़े उतरवाए हुए थे कि जो कमजोर है उसे दूध दिया जाए ताकि वह तगड़ा हो जाए। डॉक्टर ने हमारे कमांडर से पूछा कि मैं दूध की खुराक किस–किस की लगाऊँ? यह सुनकर हमारा

कमांडर रो पड़ा और बोला, ''ये सब 'बलि के बकरे' हैं, मैं तो कहूँगा कि तुम सबके लिए दूध की खुराक लगा दो।'' डॉक्टर ने सबके लिए एक–एक किलो दूध की खुराक लगा दी। आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि उस समय लोगों के दिल कैसे थे? उस वक्त मुझे कोई परेशानी नहीं थी, मेरे दिल में डर या भय नहीं था बल्कि उत्साह था।

जब मैं अभ्यास करने लगा तो मुझे ही पता है कि **मन के साथ मुकाबला** करना कितना मुश्किल है, मन अड़ी करता था कि जमीन में गुफा के अंदर नहीं जाना। मन शेर बनकर आगे खड़ा हो जाता था कि मैं तुझे अंदर नहीं जाने दूँगा लेकिन मैंने मन का कहना नहीं माना। जब मैं अपनी पूरी स्टेज पर पहुँचने ही वाला था तो एक दिन मन ने ऐसा धोखा दिया कि तुम्हें अभ्यास करते हुए इतने साल हो गए हैं लेकिन कुछ नहीं मिला, कुछ प्राप्त नहीं हुआ। मन का एक हिस्सा कह रहा था कि उठ जाओ। मैं बाहर निकला तो एक आवाज़ आ रही थी; समझ नहीं आई कि वह आवाज़ आकाश से, दाएँ से, बाएँ से, किस साइड से या कहाँ से आ रही थी लेकिन वह आवाज कह रही थी:

ए दिल तुझे कसम है, तू हिम्मत ना हारना।

जब वह आवाज़ आई तो मैं उस आवाज़ के साथ मज़बूती से फिर अंदर चला गया फिर भी कई साल अंदर बिताने पड़े। बाबा बिशन दास जी ने जो कहा था, मैंने उसे अपनी ज़िंदगी में प्राप्त किया, किसी चतुराई या होशियारी से प्राप्त नहीं किया सिर्फ उनकी दया और उनके बताए अभ्यास के मुताबिक अपनी जिंदगी ढाली और अभ्यास किया।

कई बार मन बग़ावत कर देता है कि चाहे मुझे तोप के आगे खड़ा कर दो, मैं तोप के आगे खड़ा हो जाऊंगा लेकिन मुझे भजन पर न बिठाओ। जिन लोगों ने **मन के साथ मुकाबला** किया है, आप उनकी

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हिस्ट्री पढ़कर देखें कि उन्होंने किस तरह संघर्ष किया और वे अमली तौर पर इस लाईन में कामयाब हुए।

मैंने भजन–अभ्यास किया है इसलिए मैं कहा करता हूँ कि महात्मा का और कुछ न देखें कि यह पढ़ा–लिखा है या अनपढ़ है, किस जाति का है, इसका रंग काला है या गोरा है। महात्मा का सिर्फ अभ्यास देखने की ज़रूरत है कि क्या इसने दिन–रात अभ्यास किया है, क्या इसने ज़िंदगी में पाँच–सात या दस–पंद्रह साल अभ्यास में लगाए हैं?

कबीर साहब पहले सन्त थे जो इस संसार मण्डल में आए, वे कभी इंसानी जामे से नीचे नहीं गए। उन्होंने खाने में परहेज़ रखा और बहुत साल अभ्यास किया। कबीर साहब कहते हैं:

खूब खाना खिचड़ी, जामे अमृत लून।
हेरा रोटी कारणे, गला कटावे कौन।।

गुरु नानक देव जी ने ग्यारह साल पत्थरों का बिछौना किया, सख्त तपस्या की और अभ्यास किया। आप बाबा जयमल सिंह जी का जीवन पढ़कर देखें, उन्होंने भी बहुत अभ्यास किया। महाराज सावन सिंह जी ने बहुत अभ्यास किया, वे कई–कई दिन अंदर से नहीं निकलते थे अगर बैठे–बैठे नींद आती तो खड़े होकर वैरागन के सहारे अभ्यास करते थे। महाराज कृपाल सिंह जी रात के समय रावी नदी के किनारे बहुत सख्त अभ्यास किया करते थे। महाराज कृपाल की कमाई के बारे में मस्ताना जी कहा करते थे कि जिसने कमाई देखनी है वह दिल्ली जाए।

बेशक महात्मा बने बनाए बर्तन आते हैं, नाममात्र के लिए ही यहाँ तैयार होते दिखाई देते हैं फिर भी वे दुनिया को डेमोंसट्रेशन देने के लिए कमाई करते हैं ताकि दुनिया को पता चले कि **मन के साथ मुकाबला** किए बिना कुछ नहीं मिलता। कबीर साहब कहते हैं:

हंस हंस पिया न पाया, जिन पाया तिन रोए।
हासे खेडे जे पिया मिले तो कौन दोहागन होए।।
सुखिया सब संसार है, खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है, जागे और रोए।।

गुरु नानक साहब कहते हैं:

जा लाँगें उठ नाम जप, निस वासार्य राध।
कारा तुझे न व्यापी, नानक मिटे अपाध।।

हमें अभ्यास करना चाहिए अगर हम कभी भूलकर अभ्यास करते हैं महीने, दो महीने में एक–दो दिन बैठ भी जाएँ तो हम जल्दबाज़ी करते हैं कि हमारा पर्दा नहीं खुला, अब तक तो हमें सचखण्ड पहुँच जाना चाहिए था। जिस आदमी के अंदर अपने गुरु से मिलने की आशा है, वह कोई शर्त नहीं रखता। जिसके दिल में भक्ति करने का जज़्बा है वह कभी यह नहीं कहता कि मुझे अंदर कुछ नहीं दिखा, वह कभी मन को चालाकी नहीं खेलने देता क्योंकि मन हमारे अंदर जल्दबाज़ी पैदा करता है।

आप पश्चिम के प्रेमी सन्तबानी मैगज़ीन को प्रेम से सोचकर पढ़ा करें कि हमारा सवाल क्या है और इसका जवाब क्या है? मैंने सन्तबानी आश्रम, न्यू हैम्पशायर में एक कहानी बताई थी कि दो साधू अभ्यास किया करते थे। उनके गुरु ने उनसे कहा था कि जब वे बारह साल तक अभ्यास करेंगे तो उन्हें भगवान के दर्शन होंगे। नारद जिन्हें भगवान का मन कहा गया है, उनका भगवान के साथ मिलाप था। बारह साल पूरे होने के एक–दो महीने पहले जब नारद, भगवान के पास जाने लगे तो पहले वाले साधू ने कहा कि आप भगवान से पूछकर बताना कि वे मुझे कब दर्शन देंगे? नारद ने कहा, ''अच्छा भई।'' दूसरे ने भी यही कहा कि भगवान मुझे कब दर्शन देंगे?

जब नारद भगवान से मिलने गए तो भगवान ने कहा कि नारद मुझे मातलोक के बारे में कुछ बताओ। नारद ने कहा, ''हे भगवान, संसार में कुछ लोग आपको याद करते हैं और कुछ याद नहीं करते। वहाँ बाक़ी सब तो ठीक है लेकिन दो साधू अभ्यास कर रहे हैं, उन्होंने यह पूछने के लिए संदेश भेजा है कि हमें भगवान कब मिलेंगे?

भगवान ने कहा कि तुम पहले वाले साधु से कहना कि वह कुछ महीने और अभ्यास करे फिर उसे मेरे दर्शन होंगे। दूसरे वाले साधू से कहना कि वह जिस पेड़ के नीचे बैठकर अभ्यास कर रहा है, उसके पत्ते गिन ले जब वह उतने साल और अभ्यास करेगा तब उसे मेरे दर्शन होंगे।

जब नारद वापिस धरती पर आए तो वे पहले वाले साधू के पास गए। उसके दिल में नारद के लिए आदर नहीं था। वह कहने लगा, ''क्यों भई नारद, कुछ संदेशा लाए हो?'' नारद ने कहा, ''हां, भगवान ने कहा है कि कुछ महीने और अभ्यास करना है फिर आपको उनके दर्शन होंगे।'' यह सुनकर साधू नारद से गुस्सा हो गया कि मुझे लगातार बैठे हुए बारह साल हो गए हैं, अब भगवान ने कुछ महीने और अभ्यास करने के लिए कहा है। क्या गारंटी है कि भगवान का कहा सच होगा? हो सकता है उसके बाद भगवान मुझे कुछ और महीने अभ्यास करने के लिए कहें। ऐसा कहकर वह साधू नारद को मारने के लिए उसके पीछे भागा।

उस साधू से पीछा छुड़वाने के बाद नारद दूसरे साधू के पास जाने से डर रहे थे क्योंकि पहले वाले साधू के साथ उनका अनुभव बहुत बुरा रहा था। उन्हें लगा कि दूसरा साधू भी उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करेगा। जब नारद दूसरे साधू के पास संदेश देने गए तो उस साधू ने नारद का बहुत आदर–सत्कार किया कि ये भगवान के पास से आए हैं, भगवान का प्यारा मुझे भी प्यारा है। नारद ने कहा, ''नहीं, पहले तुम

भगवान का संदेश ले लो, मैं यहाँ रुकना नहीं चाहता।'' उस साधू ने नारद से कहा, ''पहले आप मुझे अपनी सेवा का मौका दें फिर संदेश देना।'' साधू ने नारद के लिए कपड़ा बिछाया, चाय–पानी पूछा और कोई सवाल नहीं किया बस नारद की सेवा में लगा रहा।

आखिर में नारद उस साधु को भगवान का संदेश सुनाकर भागने के लिए तैयार हो गए। नारद ने कहा, ''भगवान ने मुझे तुम्हारे लिए संदेश दिया है कि तुम जिस पेड़ के नीचे बैठकर अभ्यास कर रहे हो, उसके पत्ते गिन लो अगर तुम उतने साल और अभ्यास करोगे तो भगवान तुम्हें दर्शन देंगे।'' भगवान उसे दर्शन देंगे, यह सुनकर वह साधू इतना उत्साहित और खुश हुआ कि खुशी में नाचने लगा।

आप जानते हैं कि भगवान दूर नहीं हैं, वे हमारे अंदर हैं। जब हम भगवान की तरफ़ चलते हैं तो भगवान हमारे नजदीक से नज़दीक होते हैं। इसलिए जब वह साधू खुशी में नाच रहा था तो उसका अंदरूनी पर्दा खुल गया और उसे भगवान के दर्शन हो गए। प्रेमी को भजन–अभ्यास करना चाहिए, गुरु से यह शर्त लगाकर नहीं बैठना चाहिए कि मुझे कुछ देंगे तो ही मैं आपका भजन करूँगा। जब इंसान इंसान की मज़दूरी नहीं रखता तो भगवान हमारी मज़दूरी कैसे रख सकते हैं?

एक प्रेमी: *अभ्यास में बैठे हुए जब कभी शरीर में बहुत गर्मी पैदा हो जाती है या उल्टी आने जैसा हो जाता है, इन सब चीज़ों की शुरुआत कहाँ से होती है? क्या शरीर में कोई नुख्स आने से ऐसा होता है या मन अभ्यास के दौरान ऐसा कर देता है?*

बाबाजी: कई बार हम मल–मूत्र करके अभ्यास में नहीं बैठते, हमें बैठने से पहले पेशाब वगैरह जरूर करना चाहिए। कई बार आदमी अभ्यास में प्यासा भी बैठ जाता है, इसका बात का भी ख्याल रखना

चाहिए। कभी–कभी ऐसी शिकायत होती है कि जब प्रेमी का ध्यान नहीं होता और वह आकर अभ्यास में बैठ जाता है लेकिन हर आदमी के साथ ऐसा नहीं होता।

पप्पू जी: *दिल्ली वापिस जाते हुए हम उस जगह रुकेंगे, जहां सन्त जी ने महाराज कृपाल के चोला छोड़ने के बाद कुछ महीने बिताए थे। उस समय सन्त जी को वहाँ कोई नहीं पहचानता था और न ही कोई जानता था कि ये सन्त हैं। जब सन्त जी ने वह जगह छोड़ दी तो वहां के लोगों को उनके बारे में पता चला। उस गांव के बहुत से लोग यहां आए और उन्होंने नामदान प्राप्त किया। हम वापिस जाते हुए उस गाँव में रुकेंगे, सन्त जी वहां सतसंग देंगे, हम सब उस सतसंग में शामिल होंगे।*

बाबा जी: गुरु नानक देव जी के इतिहास में आता है कि वे किसी गाँव में गए, उस गाँव के लोगों ने उनकी बहुत सेवा की। गुरु नानक देव जी ने उन लोगों से कहा, ''तुम लोग उजड़ जाओ।'' उसके बाद वे एक ऐसे गाँव में गए, जहां के लोगों ने उनका आदर–मान नहीं किया, कोई उनका सतसंग सुनने नहीं आया और उन्हें पत्थर मारे। गुरु नानक देव जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया, ''परमात्मा आप पर दया करें और आप सब हमेशा यहीं बसते रहें।''

मरदाना जी हमेशा गुरु नानक देव जी के साथ रहते थे, ये दोनों बातें सुनकर वे बहुत हैरान हुए। उन्होंने गुरु नानक देव जी से पूछा, ''हे सच्चे परमात्मा, आपकी इस बात के पीछे क्या राज है? जिन्होंने आपकी सेवा की उन्हें आपने कहा कि उजड़ जाओ और जिन्होंने आपको पत्थर मारे आपने उनसे कहा कि बसते रहें?''

गुरु नानक देव जी ने कहा कि मरदाना, तुम सन्तों के भाव को नहीं समझे। जिन्होंने मेरी सेवा की मुझसे प्रेम किया, वे बहुत अच्छे लोग थे

अगर वे उसी जगह रहते तो उनके अच्छे गुण वहीं रह जाते। बुरे लोगों को उनके अच्छे गुणों से कुछ फ़ायदा नहीं मिलता इसलिए मैंने उन्हें आशीर्वाद दिया कि वे उजड़ जाएँ अगर वे उजड़ जाएंगे तो वे जिस भी गाँव में जाएंगे अपने अच्छे गुण साथ ले जाएँगे अगर कोई एक भी अच्छा आदमी किसी गाँव में जाएगा तो वह पूरे गाँव का सुधार कर देगा। यह इंसानियत के लिए अच्छा होगा।

अगर मैं दूसरे गाँव के बुरे लोगों को यह कह देता कि तुम उजड़ जाओ, अगर वे उजड़ जाते और कई गाँवों में चले जाते तो वे अपने साथ अपने बुरे गुण भी ले जाते। वे दूसरे गाँव के लोगों को भी बुरा बना देते इसलिए मैंने उनसे कहा कि आप सब यहीं रहें ताकि बाक़ी गाँवों के लोग उनके बुरे गुणों से प्रभावित न हों।

जब परमात्मा कृपाल ने चोला छोड़ा, उस समय मैं बहुत दुखी था। छिपने के लिए मैं उस गांव में पाँच महीने तक रहा। किसी को पता नहीं था कि मैं कौन हूँ। कुछ लोग सोचते थे कि मैं सी. आई. डी. इंस्पेक्टर हूँ तो कुछ और समझते थे। वहाँ मुझे किसी ने नहीं पहचाना क्योंकि वहाँ कोई सतसंगी नहीं था और न ही मुझे कोई जानता था।

उस गाँव के बहुत से लोग मेरा मजाक उड़ाते थे। जब बाद में उन्हें पता चला तो वे शर्मिंदा हुए कि ओह! ये हमारे गाँव में पाँच महीने रह कर गए और हमें इनका पता ही नहीं चला। हम इनका मज़ाक उड़ाते रहे और इन्होंने हमें अपना भेद ही नहीं दिया कि मैं क्या हूँ? वे लोग यहाँ आए और उन्होंने नामदान लिया। अब वे मुझसे इतना प्यार करते हैं कि वे चाहते हैं कि मैं उस गाँव में जाकर सतसंग दूँ इसलिए मैंने सोचा कि दिल्ली वापिस जाते हुए मैं उन्हें सतसंग दूँ। अब उन्हें लगता है जैसे कबीर ने अपनी बानी में कहा है:

कबीरा एकु अचंभउ देखिओ हीरा हाट बिकाइ।
बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइ।।

उन्हें कीमत का पता चल गया है और अब वे प्रेम करते हैं। मैं वहाँ पाँच–साढ़े पाँच महीने रहा और कभी किसी से रोटी माँगने नहीं गया। मैं कृपाल के आसरे बैठा रहा, मैंने कभी खुद खाना तैयार नहीं किया था। अपने आप ही खाना आ जाता था और जो आदमी खाना लाता था, वह मीट–शराब छोड़ जाता था। वह गाँव पूरे पंजाब में सबसे पिछड़ा हुआ गाँव है, आप उन लोगों को देखकर बहुत हैरान होंगे। उस गाँव के लोगों ने नशा करके अपनी सेहत ऐसी बनाई हुई है कि आप यह कहेंगे कि शायद ये सब अस्पताल से आए हैं।

एक बार मैं दिल्ली से आ रहा था, उन लोगों को पता चला तो सारा गाँव रास्ते में इकट्ठा हो गया। मेरे साथ भारी भरकम भाग सिंह विरक और रतन सिंह थे। जब उनकी मुलाकात उस गाँव के कमजोर लोगों से हुई तो उन्हें ऐसा लगा कि ये अस्पताल से आए हैं। उन्होंने कहा कि जो फलां आदमी बीमार था बेचारा? मैंने कहा, ''नहीं, इनमें से बीमार कोई नहीं है, सब तंदुरुस्त हैं। सबने नशे खा–खाकर अपनी सेहत खराब की हुई हैं। वे मुझे देखकर बड़ी ऊँची आवाज़ में रोने लगे और बोले, ''अगर आप हमें पहले मिल जाते तो हमारी सेहत बच जाती, हमारी जायदादें बच जाती, हममें से बहुत सारे बच जाते। आप हमें मिले ही तब हैं जब हम सब कुछ गंवा बैठे हैं फिर भी हम आपके शुक्रगुज़ार हैं।''

मुझ उजड़े हुए के जाने से उस गाँव की हालत सुधर गई। मेरे कहने का भाव मालिक को अपने बच्चों की बहुत फ़िक्र होती है। मालिक किसी भी तरीके से उनकी सहायता करते हैं। किस तरह उन लोगों को सन्तमत की तरफ आकर्षित होना पड़ा, किस तरह मेरा वहाँ जाना हुआ। यह सब मालिक के धुर–दरगाह से बने हुए प्रोग्राम के मुताबिक ही हुआ था।

मेरा आपको यह कहानी बताने का यही भाव है कि सतगुरु जल–थल और हर जगह अपने प्रेमी की मदद करते हैं लेकिन भरोसा होना चाहिए। मैं खाना खाने कभी किसी के घर नहीं गया था क्योंकि मेरा काम सारा दिन रोने का होता था। दिल में बड़ी ही उदासी थी, विरह की अग्नि की लपटें जल रही थीं कि ये क्या हो गया लेकिन उस वक्त भी कृपाल ने मेरी रक्षा की, मुझे वहाँ बैठे हुए को हर प्रकार का खाना पहुँचाते रहे।

जब उस गाँव के लोग माहवारी सतसंग में यहाँ आते हैं, उन्हें खाना मिलता है तो वे कहते हैं कि आप तो हमें यहाँ हलवा–जलेबियाँ खिलाते हैं लेकिन अफसोस की बात है कि हमें यह भी पता नहीं कि हमारे गाँव में आपको रोटी मिलती भी थी या नहीं।

मैं वहाँ एक खराब सी जगह के अंदर रहा करता था। बाहर पेड़ के नीचे अमलियों का डेरा था। मैं जब अंदर से बाहर निकलता तो जो नशेड़ी बीड़ी वग़ैरह पिया करते थे, वे फ़ौरन बीड़ी बुझा देते थे। वे कहते थे कि समझ नहीं आता कि यह किसी के घर नहीं जाता, किसी से बात नहीं करता लेकिन इसके सामने हम बीड़ी–शराब भी नहीं पी सकते।

वे लोग रात को नहाकर मुझसे मिलने के लिए आते और कहते कि अब हम बीड़ियों का धुआँ उतारकर आए हैं। दिन में उन्हें मेरी आँखों की तरफ झांकना मुश्किल होता था इसलिए वे रात को आते थे। वे कहते थे कि हम आपको अंदर से तो बहुत मानते हैं, हमारी आपके प्रति बहुत श्रद्धा है लेकिन हमें शर्म आती है क्योंकि हम अभी नशे नहीं छोड़ सके।

मालिक की दया से वे सब अब नशे छोड़ गए हैं। हर आदमी को अपने सतगुरु पर पूरा भरोसा होना चाहिए। गुरु सेवक की मुनासिब ज़रूरतें पूरी करते हैं, गुरु को हमसे करोड़ों गुना ज़्यादा फ़िक्र होती है। जो आदमी अपनी फ़िक्र करते हैं और कहते हैं कि हम अपनी रक्षा करते हैं, वे बड़ी भूल में हैं। ***

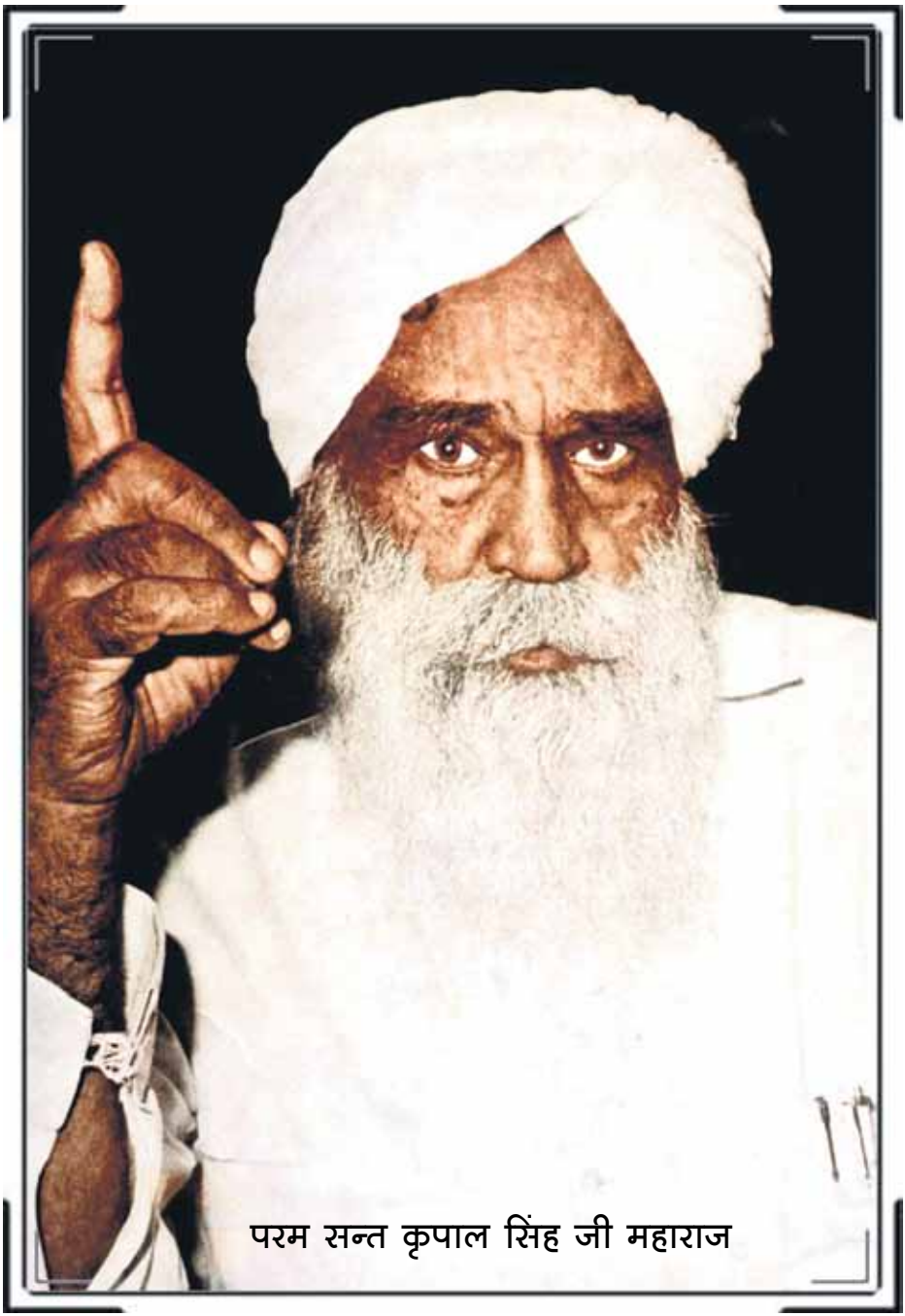

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के द्वारा दिया हुआ एक संदेश

सिमरन एक जरूरी दवा है

मैं आपकी सोच का मान करता हूँ कि सतसंग केवल पवित्र नाम का सिमरन करने के लिए और गुरु की बताई बातों को सीखने के लिए होना चाहिए। हमें उन लम्बी बातों से बचना चाहिए जिनसे निराधार वाद–विवाद हो। यह तो ग्रहण करने वाली बात है कि गुरु की प्यार भरी ताकत हमारे मन को शान्ति देती है। जो किताबें यहाँ से प्रकाशित की जाती हैं वे प्रमाणिक और दूसरी किताबों की तुलना में ज्यादा गहराई से बताती हैं और ये किताबें बिना किसी भय के पढ़ी जा सकती हैं। अगर दूसरी किताबें भी गुरु की सीख के अनुसार बताती है तो वे भी पढ़ी जा सकती हैं।

हमें अपने अंदर के अनुभव केवल गुरु को ही बताने चाहिए। बोलने वाले को संयम और शान्ति से काम लेना चाहिए। अपनी बात को पहले प्यार भरे शब्दों में डुबोकर तैयार करना चाहिए कि यह गुरु की दया है। निपुणता धीरे–धीरे आती है तभी गुरु के मार्गदर्शन के नीचे सही दिशा में हर कदम लाभदायक है। धैर्य और पवित्रता को कभी नहीं खोना चाहिए।

आप जितना गुरु की ओर बढ़ेंगे उतना ही आपको गुरु से प्यार और दया मिलेगी। आप नामलेवा को बताएं कि वह अपने अनुभव किसी को न बताएं क्योंकि इससे उसकी आगे बढ़ने की क्षमता में रूकावट आएगी। आपके अंदर त्याग की भावना होनी चाहिए जो इस भावना को घर में नहीं पा सका वह इसे जंगलों में भी नहीं पा सकेगा।

दुनिया और दुनियावी चीजों का सिमरन करने से आप दुनिया के होकर रह जाते हैं। इस तरीके को अपनाकर आपने दुनियावी विचार अपने

मन से हटाने हैं और सिमरन करते समय केवल परमात्मा को याद रखना है। सिमरन के दो उपयोग हैं। *पहला*–गुरु द्वारा दिए गए 'नामदान' का सिमरन करके अपनी देह से ऊपर उठना है। *दूसरा*–परमात्मा का ध्यान करके दुनियावी चीजों को अपने अंदर से निकाल फैंकना है। जो सुख में परमात्मा को नहीं भूलता, दुख कभी उसके नजदीक नहीं आता।

दुख हमारे नजदीक तभी आता है जब हम परमात्मा को भूलकर पाप करते हैं। सिमरन हमारी आत्मा की दवाई है, यही हमारे संकल्पों को दिन–प्रतिदिन मजबूत बनाती है। दुख और परीक्षा का समय चाहे कितना भी कष्टदायक क्यों ने हो, हमें निराश नहीं कर सकता। हम हँसते–हँसते किस्मत की आँधियों को बिना किसी नुकसान के पार कर जाते हैं।

सिमरन एक जरूरी दवा है, जहाँ इंसान की सब कोशिशें नाकामयाब हो जाती हैं वहाँ सिमरन अदभुत तरीके से काम करता है। जो नामलेवा स्थिर होकर सिमरन करता है, उसे कोई चिन्ता नहीं सताती। सिमरन को प्रभावशाली बनाने के लिए इसे स्थिर तरीके से रोजाना करना चाहिए। रोजाना परमात्मा का सिमरन करना अपनी जिंदगी परमात्मा को अर्पित कर देने के बराबर है।

सिमरन के खजाने को दुनियावी लोगों से छिपाकर रखना चाहिए। यह ऐसा बहुमूल्य खजाना है जिसकी कीमत दुनियावी लोग नहीं समझ सकते। इस अनमोल खजाने की असलियत तभी प्रकट होगी जब आप अपनी आँखों पर पड़े पर्दे को हटाएंगे। सिमरन को प्रभावशाली बनाने के लिए इसे प्रेम–प्यार और भक्ति से करना चाहिए।

मुझे खुशी है कि आप परमात्मा की अलग–अलग रोशनी और आवाज के अनुभवों से पवित्र बने हैं। आपको सही तरीके से सिमरन करके ऐसे अंदर के अनुभवों को और बढ़ाना है। जैसा कि मैंने अपने पत्र में बताया है कि यह आपके ध्यान का अनिवार्य परिणाम है जिसे आपने परमात्मा के

प्यार में पूरा किया है, यह सदा आपके साथ काम करता है। गुरु ने अपने गुरु की दया से दिन के उजाले में खुली आँखों से आपको पवित्र बनाया है।

जब आप परमात्मा रूपी गुरु को देखें तो आपका पूरा ध्यान उनकी आँखों में होना चाहिए, इतना कि आप खुद को भूल जाएं। आप अपने अंदर भावना उत्पन्न कर लेगें और गुरु आपसे बात करेगें। उस समय अगर आपको कोई आवाज सुनाई दे तो आप उस आवाज को सामने आने के लिए कहें। इस तरह 'पाँच शब्दों' का सिमरन करके असलियत आपके सामने आ जाएगी अगर वह आपके सामने खड़ा रहता है तो वह आपका गुरु है।

बूँद–बूँद आँसू का बहना स्वाभाविक ही मन के मैलेपन को धो देता है। वे आँखें किस्मत वाली हैं जो इसे निकाल फैंकती हैं। यह गुरु की दया है कि वह अपने बच्चों को याद रखते हैं। जो गुरु के कहे अनुसार चलते हैं वे गुरु की दया और कृपा के समुंद्र से फायदा उठा लेते हैं।

मैं आपकी गुरुभक्ति की कद्र करता हूँ जिससे आपके शारीरिक व मानसिक दुख उस दिव्यता में मिल जाते हैं। इतने शान्त हो जाएं कि दयावान गुरु की ताकत आपको उनके प्रताप और कीर्ति में पूरी तरह से मग्न कर दे। अपने स्वार्थ को पूरी तरह से मिटा दें और अपने दोहरेपन से बाहर आकर अपने 'मैं' को भूल जाएं। खुद का त्याग करना परमार्थ के रास्ते पर एक कदम और आगे बढ़ाना है। अपने बीते हुए कल और आने वाले कल को पूरी तरह से भूल जाएं। उस पवित्र परमात्मा के आगे अपने आपको अर्पित कर दें। जीवन का अमृत डालकर प्यासे बच्चों में बाँटने के लिए पारदर्शी साफ बर्तन चाहिए।

मैं खुश हूँ कि आप अपना स्वार्थ छोड़कर गुरु की सेवा में लगे हैं। परमात्मा आपके सिर पर खड़े हैं जो भटकती हुई रूहों को सही रास्ते पर डालकर अपने असली घर पहुँचाएंगे। जो दूसरों पर गलत प्रभाव डालकर

उन्हें हानि पहुँचाने की कोशिश करते हैं, उनकी अपनी तरक्की में ही देर होती है। मैं उन लोगों से प्यार करता हूँ और आपको भी उनसे प्यार करना चाहिए, उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए कि उन्हें बेहतर और सबसे अच्छा उपदेश मिले जिससे वे प्रभावित हों।

जो उसे ढूंढते हैं, उसकी खोज करते हैं, उन्हें वह मिल जाता है। गुरु के लिए आपका प्यार देखकर मुझे खुशी होती है। गुरु ही प्रेम का प्रतीक है और परमात्मा रूपी होने के कारण गुरु प्रेम ही परमात्मा का प्रेम है। यह नामलेवा की तरक्की के लिए जरूरी है क्योंकि इससे उसके दुनियावी लालच, स्वार्थ, घमंड और अज्ञानता दूर होते हैं। गुरु उसकी आत्मा को परमात्मा के असली घर की ओर ले जाते हैं।

जब एक बच्चा गुरु का शिष्य बनकर पवित्र नामदान से जुड़ता है तभी से उसे परमात्मा की भरपूर दया और सुरक्षा मिलती है। गुरु की दया से ही उसके अंदर सच्चा प्रकाश होता है। कोई और इसे अपनी मेहनत का फल नहीं कह सकता। फिर भी यह बहुत जरूरी है कि उनके कहे गए वचनों का सख्ती से पालन किया जाए जिससे हमें उनकी दया और आशिर्वाद मिले।

'नाम' एक जरूरी दवा है, नाम की चढ़ाई अंदरूनी अनुभव से नहीं बल्कि शिष्य की अपनी शान्त जिंदगी के आचार–विचार से होती है। सच बोलना सबसे बड़ी चीज है पर सच्ची जिंदगी जीना उससे भी बड़ा है। इंसान अपने कर्मों और अपने आस–पास के लोगों से पहचाना जाता है। जैसे ही कोई उस पवित्र 'नाम' से जुड़ता है तो उसकी चढ़ाई नियमित, निरंतर बढने वाली और शान्त रूप से होने लगती है।

हमारे अंदर की शान्त दरार हमें अभिलाषाएं और गुरु से बिछोड़े की पीड़ा दे जाती है, पवित्र 'नाम' हमारे हृदय के अंदर खुशी की लहर लेकर आता है। सच्चे शिष्य की यही कोशिश एक दिन उसके लिए यश और कीर्ति के दिव्य दरवाजे खोल देती है जिससे उसे अनमोल खुशी मिलती है।

शान्ति और अकेलापन आपकी मदद करने वाले हैं। शान्त जिंदगी का मूल नियम खुशी से दूरी है क्योंकि खुशी हमें अपने कर्मों के अनुसार मिलती है और खुशी से दूरी हमें रोज मिलने वाली दया दिलाती है जो हमारी आखिरी बेहतरी के लिए होती है। नियम पालन करने वाले शिष्य को सब कुछ बहुत ऊँचाई से देखना चाहिए और अपनी जिंदगी को बिना किसी अफसोस के स्वीकार करना चाहिए। अगर आपकी चढ़ाई नियमित रूप से नहीं हो रही तो इसके लिए आपको बहाने बनाने की जरूरत नहीं। आपको अपने किए पर विश्वास होना चाहिए। नियमित रूप से विश्वास के साथ भजन पर बैठना और सच्चे मन से गुरु को याद करना है।

अध्यात्मिकता का मोह निद्रा से, मूर्छित करने की विधि से और मृतकों की आत्मा संबंधी बातों से कोई लेना–देना नहीं है। आपको ठंडक तब महसूस होती है जब आप उनके साथ भजन पर बैठते हैं, अपना हाथ उनके हाथों में दे देते हैं और अपना मन दोनों आँखों के बीच माथे पर केन्द्रित करते हैं। इसे दोहराने से आपकी अंदरूनी चढ़ाई पर असर पड़ता है। आपका लक्ष्य केवल उस पवित्र नाम की लय में बह जाने का होना चाहिए और आप सभी दूसरी तरह के सिमरन को अनसुना कर दें। भजन के दौरान नामों का बार–बार सिमरन करने से सुरत लग जाती है।

प्यार से भरे हुए इंसान का हृदय बोलता है, भक्ति से भरा प्यार परमात्मा तक पहुँचने वाले रास्ते को साफ करता है। इच्छा है कि परमात्मा हमारे पास आने से पहले हमें बता दें ताकि हम उनका आशीर्वाद पाने के लिए पूरे विश्वास के साथ दरवाजे पर खड़े रहें। प्यारे हृदय वाला दूसरों से भी प्यार प्राप्त कर लेता है। परमात्मा आपको आपके लक्ष्य के नजदीक पहुँचाने के लिए आपकी धार्मिक और पवित्र भावनाओं को देख रहा है।

अगर आपकी शादी करने की इच्छा नहीं है तो शादी करने की जरूरत भी नहीं है। शादी का मकसद एक साथी का होना है जो आपके

हर सुख–दुख में आपका साथ दे और सबसे ऊँची मंजिल हासिल करवाने में आपकी मदद करे। अगर कोई प्रेमी आत्मा केवल परमात्मा का प्यार हासिल करना चाहती है, शादी की कोई इच्छा नहीं रखती तो उसे ऐसा ही करना चाहिए। सच्चे मन से ऐसा करने के लिए मेरा प्यार और दुआएं आपके साथ हैं।

'नामदान' ही किसी भी इंसान के लिए सबसे बड़ा उपहार है, यह केवल परमात्मा की दया से ही प्राप्त होता है। हमने खूनी और डकैतों के कई किस्से सुने हैं, उनमें से जो गुरु रूपी परमात्मा से प्रभावित होकर उनकी शरण में आए हैं उनके अंदर प्यार और दया की लहर दौड़ गई।

जो बिना किसी स्वार्थ और प्यार से गुरु का कार्य करते हैं, निश्चित तौर पर गुरु उनकी मदद करते हैं और उनकी चढ़ाई होती है। जो व्यर्थ दिखावा करता है, वह अपना ही नुकसान करता है। मैं आशा करता हूँ कि आप एक–दूसरे को समझेंगे और प्यार से पेश आएंगे।

गुरु को हमेशा अपने बच्चों की जरूरतों और इच्छाओं के बारे में पता रहता है और वह उनकी भलाई के लिए सोचते हैं। हमें सभी ऐबों को एक–एक करके अपने अंदर से निकाल फैंकना चाहिए। जब शिष्य पूरे मन से ऐसा करता है तो उसे यह शक्ति अपने अंदर से ही मिल जाती है। ऐसी कोशिश में बहुत समय लग सकता है लेकिन कोशिश जरूर करें, जो गुरु के प्यारे हैं उनकी कोशिश जल्द सफल होगी।

मुझे खुशी है कि आप पत्र में दिए गए पवित्र आदेशों का पालन करते हैं। अभी तक आप अंधेरे पर्दों के बीच से देखने में कामयाब रहे हैं लेकिन अब आपको अपने विचारों को स्थिर करना है, यह कोशिश करने से ही होगा। आप देखेंगे, जब आपका पूरा ध्यान दोनों आँखों से ऊपर बीच में स्थिर हो जाएगा तो 'नाम' के सिमरन से सब बेकार के विचार चले जाएंगे। तब आप अपने अंदर एक गर्मी महसूस करेंगे जो ऊपर से आ रही हो वह

धीरे–धीरे बढ़ती जाएगी फिर आप अपने अंदर चल रहे पवित्र सिमरन को बढ़ते हुए समझ पाएंगे। अच्छी तरह जोती गई जमीन प्यार और दया के पानी से सींची जाती है तो उस पर फसल भी अच्छी होती है।

आपके पास अंदरूनी अनुभव है, यह उत्तम 'नाम' हमेशा आपकी आँखों के सामने रहता है। आप इसकी गूंज सुनते हैं और अपनी खुली आँखों से भी गुरु के दर्शन कर लेते हैं। अब आपको अपने अंदर इतनी शक्ति लानी है कि प्रकाशमान गुरु आपके अंदर आ सकें। गुरु धीरे–धीरे आपको ऊपर की ओर ले जाऐंगे अगर कोई आपसे प्रश्न करता है तो आप उसे प्यार से उत्तर दें जैसा कि आपको गुरु ने समझाया है। यह तो परमात्मा रूपी रोशनी को अंदर से देखने और परमात्मा के संगीत को अंदर से सुनने का सवाल है। गुरु की शिक्षा बाइबल से प्रेरित होती है जो इसका सच्चा मतलब समझ जाएंगे वे उसे देख सकेंगे।

जब हम ऊपर से नीचे की ओर अपनी बाईं बाँह और पीठ की रीढ़ की दाहिनी ओर, कूल्हे से गर्दन की ओर, दिमाग के निचले हिस्से में करंट

की लहर महसूस करते हैं तो ये सब भजन–सिमरन से होता है। यह शायद इसलिए होता है क्योंकि आपकी रूह आपसे बिछुड़ रही है और आपका शरीर यह सब देख रहा है।

जब आप भजन पर बैठते हैं तो आपको अपने शरीर के अंदर चल रही इस क्रिया के बारे में नहीं सोचना चाहिए। आपको अपने शरीर, बाहरी वस्तुओं, साँसो और अंदर चल रही बिछोड़े की क्रिया के बारे में किसी भी चीज की खबर नहीं होनी चाहिए। आपका ध्यान सिर्फ उस रोशनी के मध्य में होना चाहिए जो आपको दोनों आँखों के ऊपर बीच में दिखाई देती है। अगर आप हर चीज को भूल जाएंगे तो जिस तरह मक्खन में से बाल निकाल दिया जाता है उसी तरह बिना किसी मुश्किल आपकी आत्मा ऊपर की ओर चढ़ाई करती है। आप विश्वास और भक्ति के साथ प्यार से भजन करते रहें आपकी मुश्किलें दूर हो जाएंगी और आप दिन–प्रतिदिन तरक्की करते जाएंगे।

आत्मा की चढ़ाई के लिए सतसंग बहुत जरूरी है, हम गुरु की सच्ची शिक्षा को सही तरीके से अपने मन में धारण करते हैं तो इससे हमारी गुरु भक्ति बढ़ती है। इसके अलावा आप आस–पास की वस्तुओं से भी दुर्लभ परम सुख प्राप्त करते हैं जिनमें आप अपने गुरु की उपस्थिति महसूस करते हैं जिससे आपको अध्यात्मिक फायदा होता है।

हमें भजन से पहले पवित्र धुन जो हमारी दाहिनी ओर से आ रही है, उसे सुनना चाहिए, सच तो यह है कि जब यह दिव्य मधुर स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई दे तो समझिए कि दयालु गुरु की ओर से बुलावा आया है, इसे लीन होकर ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए।

गुरु हमेशा शिष्य के साथ रहते हैं चाहे वह जहाँ भी हो। मौत और दूरी का गुरु और शिष्य के रिश्ते में कोई महत्त्व नहीं है, वे हमेशा यहाँ और वहाँ उसके साथ खड़े हैं। जो कर्म हम अपनी पवित्र आत्मा की सेवा से

करते हैं, उससे हमें आत्मिक मुक्ति मिलती है। हमें इसे सजा के डर से या ईनाम की आशा के बिना निभाना चाहिए। आप अपने भाग्य को नियंत्रित कर सकते हैं और यह कह सकते हैं कि स्वार्थहीन भक्ति ही हमारा कर्त्तव्य है। यही कर्म की राह पर जीत हासिल करने का मंत्र है।

स्वार्थहीन कर्म वे होते हैं जिनके लिए हम किसी ईनाम या पहचान के अधिकारी नहीं होते। ये हम पर थोपा गया ऋण नहीं है बल्कि यह अपनी इच्छा से होता है। आपको अपने सांसारिक खर्चे पूरे करने के बाद अपने बुढ़ापे के लिए कुछ बचत करनी चाहिए अगर फिर भी कुछ बचा है तो उसे दान कर देना चाहिए।

मुझे यह जानकर खुशी है कि आप शारीरिक तौर से मेरे साथ भारत में रहना चाहते हैं क्योंकि आपको लगता है कि इससे आपकी चढ़ाई में प्रेरणा मिलती है। मैं इसे सराहता हूँ गुरु के व्यक्तित्त्व में अपनी ही तरह की प्यारी मोहकता और आकर्षण होता है जिसे हम कम नहीं आँक सकते। चाहे आप उससे कितनी भी दूर हैं वह फिर भी हमेशा आपकी मदद और रक्षा के लिए आपके साथ है। उनकी ओर मुँह करके खड़े रहना सीखें ताकि आप उनकी दया और आशिर्वाद पा सकें। ऐसा करने के लिए आपको अपनी सारी आशाएं त्यागकर रोजाना सही तरीके से भजन–सिमरन करना होगा। वे आपको अंदर सब कुछ देगें जो आपके लिए उचित है।

जैसा कि मैंने अपने पिछले पत्र में भी बताया था कि आपको दुनियादारी, कर्त्तव्य, आस–पास की वस्तुएं, रिश्तेदार आदि सब कुछ भूलकर उस समय को केवल गुरु के लिए बचाकर रखना है। इस तरीके से आप जो भी समय भजन के लिए देंगे उससे आपको आगे उत्तम परिणाम मिलेंगे।

मीट, अंडे, शराब आदि हमारी अंदरूनी चढ़ाई के रास्ते में रूकावट पैदा करते हैं, हमें इनसे दूर ही रहना चाहिए। आपको कोई बड़ी चीज चाहिए तो कुछ छोटी चीजों को त्यागना होगा। नामलेवा को दृढ़ता से

शाकाहारी भोजन का सेवन करना चाहिए। जैसा यीशू मसीह ने भी किया था, सच्चे ईसाई को अपने गुरु यीशू की शिक्षा के अनुसार चलना चाहिए।

जब हम सही पथ पर चलते हैं तो पाते हैं कि हम पूर्ण नहीं हैं, पूर्णता धीरे–धीरे आती है इसे समय चाहिए अगर कोई इस सीमा से नीचे गिरता है तो वह खुद को नुकसान पहुँचाता है। जब आप परमात्मा और अपने आस–पास के लोगों से प्यार करते हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किसमें विश्वास रखते हैं क्योंकि परमात्मा के दरबार का पासपोर्ट तो आपके हृदय का प्यार है न कि जाति का कोई लेबल।

जब रोशनी होती है तो उसे झाड़ियों में नहीं छिपा देना चाहिए बल्कि प्यार से उसे ऐसी जगह रखना चाहिए जहाँ वह सच खोजने वालों का ध्यान आकर्षित कर सके।

प्रश्न – परमात्मा की सेना में शामिल होने के लिए हमें और क्या करना चाहिए?

उत्तर – हमें सीधे सच्चे पथ पर चलना चाहिए। इसके लिए हमें अच्छा सोचना, अच्छा बोलना और अच्छे कर्म करने चाहिए। जो बुरा सोचता है, बुरा बोलता है या बुरे कर्म करता है, वह बुराई की शक्ति को मजबूत बनाता है। जो परमात्मा से संबन्ध रखते हैं, उन्हें अपने अंदर अच्छे विचारों, अच्छी बातों और अच्छे कर्मों से आग जलाकर रखनी चाहिए जिसमें परमात्मा और गुरु को छोड़कर सब कुछ राख हो जाए।

सच्चे इंसान का पहला कर्त्तव्य है कि वह अपने दुश्मन से भी प्यार करे, उसे अपना मित्र बना ले। पापी को सच्चाई सिखाएं और विवेक बुद्धि की रोशनी फैलाएं। ऐसा करने के लिए विवेक और साफ मन होना चाहिए। हमारे अंदर ऐसी सच्चाई तभी आएगी जब हम अच्छे विचारों, अच्छी बातों और अच्छे कर्मों के पानी से अपने आपको नहलाएंगे।

एक बार एक सभ्य आदमी मेरे गुरु हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के पास आकर बोला, ''यह बहुत अच्छा है कि आप 'नाम' का कीमती तोहफा उत्साहित सच के खोजियों को देते हैं परन्तु यह सही नहीं है कि आप एक सच्चे खोजी और सबसे बड़े पापी में कोई अंतर नहीं समझते।'' उत्तर में मेरे प्यारे गुरु ने साफ लफ्जों में कहा, ''कपड़े चाहे कितने भी गंदे हों क्या धोबी कपड़े धोने से मना करता है?'' इसी तरह जो सच्ची लगन से गुरु के पास आते हैं गुरु कभी भी उन्हें खाली हाथ नहीं लौटाते।

'नामदान' के बाद शिष्य का गुरु के साथ सीधा सम्बंध हो जाता है। कोई भी मुश्किल जो स्थानीय प्रतिनिधि से नहीं सुलझती, वह उसे सीधा गुरु के पास ले जा सकता है। प्रतिनिधि प्रारंभिक मामलों में मदद करने के लिए हैं, नीतिशास्त्र और नम्रता के आम नियम अच्छे और स्वस्थ लोगों के लिए अपराध नहीं हैं। नामलेवा की जिंदगी में तो यह और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ऐसी चीजें आत्मा की चढ़ाई में रूकावट बनती हैं अगर कोई गलती करता है तो दूसरे को सहनशील होना चाहिए।

नामलेवा को अपने लिए और दूसरों के फायदे के लिए गुरु रूपी टार्च की रोशनी का प्रतीक बनकर उसकी भक्ति और प्यार से भरी शिक्षा को समझाना चाहिए। जिस प्रकार गुरु जिंदगी जीते हुए परमात्मा के साथ सीधा सम्बंध रखते हैं, उसका भी वर्णन करना चाहिए। हमारा लक्ष्य, 'माफ करो और भूल जाओ' होना चाहिए। मीठे वचनों का कोई मोल नहीं होता लेकिन उनका परिणाम प्रभावित करने वाला होता है।

जैसे गुरु हमारे अंदर ठहरते हैं अगर हमनें उनसे मिलना है उन्हें अनुभव करना है और उनकी दुआ लेनी है तो हमें भी अंदर झांकना होगा। हम तब तक उनकी आवाज नहीं सुन सकते जब तक हम दुनियावी उपद्रव से बाहर निकलकर आत्मा की गहरी अंदरूनी शान्ति में प्रवेश न कर जाएं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

अमृतवेला

परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में करोड़ों बार नमस्कार है, जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब तक हमारी आँखें नहीं खुली हम तब तक ही कहते हैं कि हम भजन–अभ्यास करते हैं या सतसंग में जाते हैं लेकिन जब हमारी आँखें खुल जाती हैं तब पता चलता है कि हमें अंदर किसी ताकत ने सतसंग में आने और भजन में बैठने की प्रेरणा दी है।''

वह ताकत कण–कण में व्यापक है, जब जीवों का उद्धार करती है तो किसी न किसी इंसान का शरीर धारण करके संसार में जरूर आती है। कबीर साहब कहते हैंः

अग्नि लगी आकाश को झड़–झड़ पैंण अंगियार,
सन्त न होते जगत में तो जल मरता संसार।

सन्तों के बिना संसार सूना नहीं रहता। यह हमारी भूल है जो हम यह कह देते हैं कि पहले ही परमात्मा ने सन्तों को भेजा था, अब नहीं भेजेंगे।

हमें इन महान हस्तियों महाराज सावन, महाराज कृपाल ने इस तरह सिखाया जैसे लोग तोते को सिखाते हैं। जिस तरह शीशे के पीछे बैठकर बोला जाता है और तोता अपनी शक्ल शीशे में देखकर सोचता है कि शायद मैं ही बोल रहा हूँ। इसी तरह उन महान गुरुओं ने हमारे ऊपर बहुत भारी दया की, उन्होंने हमें समझाया कि आप इस तरह बैठें और इस तरह ध्यान करें अगर आप यह काम करेंगे तो मैं आपका जिम्मेदार हूँ।

वे बहुत प्यारे थे और सदा यही कहते रहे, ''प्यारे बच्चों, मनबुद्धि का त्याग करें और किसी महात्मा से नाम की युक्ति लेकर अंदर जाएं क्योंकि परमात्मा हमारे अंदर हैं। नौं द्वारे खाली करके तीसरे तिल पर

एकाग्र होवें। शब्द की आवाज सचखण्ड से उठकर इस जगह धुनकारे दे रही है। परमात्मा आपको अपने महल रूपी घर से निकालकर खुद हमारे अंदर बज्र किवाड़ लगाकर बैठ गया है।'' पूर्ण सन्त के बिना बज्र किवाड़ नहीं खुलता। गुरु साहब प्यार से कहते हैंः

नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै।।
बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै।।

यह शरीर एक महल है, इसके नौं दरवाजे हैं परमात्मा की तरफ जाने वाला दरवाजा गुप्त है। नौं दरवाजे प्रकट रूप से दिखते हैं दो आँखों के सुराख, दो नाक के सुराख, दो कान के सुराख, मुँह और नीचे की दो इन्द्रियों के सुराख हैं। ये बाहर जगत की तरफ खुलते हैं लेकिन दसवां दरवाजा अंदर की तरफ खुलता है।

हम इस दरवाजे को पढ़–पढ़ाई से, हौमें–अहंकार से और किसी भी यत्न से नहीं खोल सकते। इस दरवाजे को हम किसी रहबर मालिक के प्यारे महात्मा की दया–मेहर से ही खोल सकते हैं। हम जो रोज–रोज भजन–अभ्यास करते हैं, यह अपने जीवन को पवित्र बनाने का और दया प्राप्त करने का साधन–तरीका है।

इसलिए हमें भी चाहिए कि जैसे हमारे महान गुरुओं ने अपनी कीमती जिंदगी का एक–एक मिनट हमारी तरफ लगाया है, हम भी उनकी दया–मेहर का पूरा फायदा उठाएं। महाराज जी कहा करते थे, ''सेवक के जिम्मे वही काम लगाया जाता है जिसे वह कर सकता है, वह है भजन–सिमरन।'' आँखें बंद करके अपना भजन शुरु करें।

***

धन्य अजायब

2024 में सतसंगों के कार्यक्रम

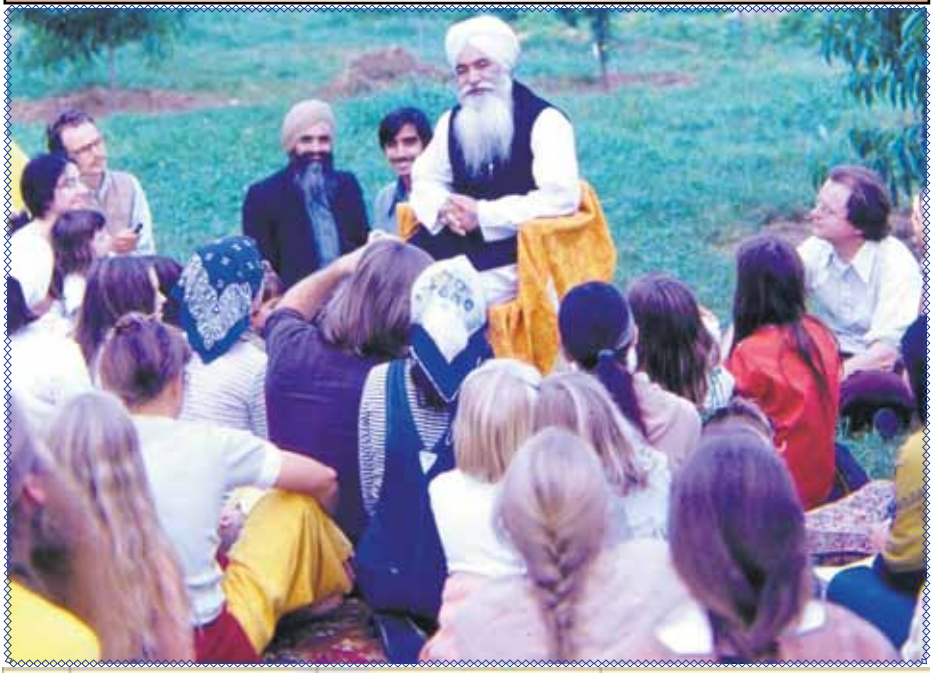

1	2 – 4 अगस्त	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	जयपुर
2	7 – 12 सितंबर	शनिवार से वीरवार (6 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
3	4 – 6 अक्तूबर	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
4	1 – 3 नवंबर	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
5	29 नवंबर – 1 दिसंबर	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम

RNI No - RAJHIN/2003/9899